Roll No : .....

Total No. of Questions : **5**] [Total No. of Printed Pages : **7**

AP–460

M.A. (Final) Examination, 2021

HINDI

(For Due & Imp.)

Paper - IV (v)

जयशंकर प्रसाद

(बकाया एवं अंक सुधार हेतु)

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **100***

नोट :– सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। प्रत्येक इकाई में प्रश्न 'अ' **7** अंकों का प्रश्न, 'ब' **10** अंकों का एवं प्रश्न 'स' **3** अंकों का है। प्रत्येक इकाई में प्रश्न 'अ' की शब्द सीमा **200** शब्द, प्रश्न 'ब' की शब्द सीमा **400** शब्द एवं प्रश्न 'स' की शब्द सीमा **100** शब्द है। प्रत्येक इकाई के सभी प्रश्नों का उत्तर क्रमवार एक ही स्थान पर लिखिए।

इकाई–I

1. निम्नलिखित पद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा **200** शब्द) :

(अ) "ओ चिन्ता की पहली रेखा,

अरी विश्व वन की व्याली,

ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,

प्रथम कम्प सी मतवाली।

हे अभाव की चपल बालिके,

री ललाट की खल लेखा।

हरी-भरी सी दौड़धूप ओ

जल माया की चल रेखा।"

अथवा

"ऊषा सुनहले तीर बरसाती

जयलक्षमी सी उदित हुई,

उधर पराजित कालरात्रि भी

जल में अन्तर्निहित हुई।

वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का

आज लगा हँसने फिर से,

वर्षा बीती, हुआ सृष्टि में,

शरद विकास नए सिरे से। **7**

(ब) 'सच्चे अर्थों में, कामायनी मानवता के संवेदनों की विकासशील कहानी है।' तर्क सहित उक्त कथन की विवेचना कीजिए (शब्द सीमा **400** शब्द)।

अथवा

कामायनी के 'श्रद्धा सर्ग' की साहित्यिक विशेषताओं का विवेचन कीजिए। (शब्द सीमा **400** शब्द)। **10**

(स) कामायनी की वर्तमान के सन्दर्भ में प्रासंगिकता लिखिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)।

अथवा

'कामायनी' का उद्देश्य बताइए। (शब्द सीमा **100** शब्द)। **3**

इकाई–II

2. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा **200** शब्द) :

(अ) "भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभासमात्र हो जाता है, उसको ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन नहीं अभिभूत कर सकते, दूत। वह किसी बलवान की इच्छा का क्रीड़ाकन्दुक नहीं बन सकता। तुम्हारा राजा अभी–झेलम भी नहीं पार कर सका, फिर भी जगत विजेता की उपाधि लेकर जगत को वंचित करता है। मैं लोभ से, सम्मान से या भय से किसी के पास नहीं जा सकता।"

अथवा

"त्याग और क्षमा, तप और विद्या, तेज और सम्मान के लिए हैं—लोहे और सोने के सामने सिर झुकाने के लिए हम लोग बाह्मण नहीं बने हैं। हमारी दी हुई विभूति से हमीं को अपमानित किया जाए, ऐसा नहीं हो सकता। कात्यायन। अब केवल पाणिनी से काम नही चलेगा। अर्थशास्त्र और दण्ड नीति की आवश्यकता है।" **7**

(ब) "'चन्द्रगुप्त' नाटक में प्रसादजी ने राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति दी है।" इस कथन की आलोचना कीजिए। (शब्द सीमा **400** शब्द)।

अथवा

'चन्द्रगुप्त' नाटक के प्रमुख स्त्री पात्रों—अलका, सुवासिनी और कार्नोलिया का चरित्र-चित्रण कीजिए। (शब्द सीमा **400** शब्द)। **10**

(स) 'चन्द्रगुप्त' नायक के चरित्र-विधान पर प्रकाश डालिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)।

अथवा

रंगमंच की दृष्टि से चन्द्रगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)। **3**

इकाई–III

3. निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा **200** शब्द) :

(अ) पाप और पुण्य कुछ नहीं हैं, यमुना, जिन्हें हम छिपाकर किया चाहते हैं। उन्हीं कर्मों को पाप कहते हैं परन्तु समाज का एक बड़ा भाग उसे यदि व्यवहार्य बना दे, तो वही कर्म हो जाता है, धर्म हो जाता है। देखती नहीं हो, इतने विरुद्ध मत रखने वाले संसार के मनुष्य अपने-अपने विचारों में धार्मिक बने हैं। जो एक के यहाँ पाप है, वही तो दूसरे के लिए पुण्य है।

अथवा

"चिन्ता जब अधिक हो जाती है, तब उसकी शाखा-प्रशाखाएँ इतनी निकलती हैं कि मस्तिष्क उनके साथ दौड़ने में थक जाता है। किसी विशेष चिन्ता की वास्तविक गुरुता लुप्त होकर विचार को यांत्रिक व चेतना विहीन बना देती है। तब पैरों से चलने में, मस्तिष्क से विचार करने में, कोई विशेष भिन्नता नहीं रह जाती। मंगलदेव की वही अवस्था थी।" **7**

(ब) सिद्ध कीजिए कि प्रसादजी ने युग विचारों से प्रभावित होकर अपने आदर्शवाद के स्थान पर युगानुकूल यथार्थवाद की प्रस्तुति के लिए 'कंकाल' उपन्यास लिखा। (शब्द सीमा **400** शब्द)।

अथवा

'कंकाल' उपन्यास का उद्देश्य समझाते हुए उसके नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। (शब्द सीमा **400** शब्द)। **10**

(स) कंकाल में वर्णित देशकाल का मूल्यांकन कीजिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)।

अथवा

यमुना (तारा) का चरित्र-चित्रण कीजिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)। **3**

इकाई–IV

4. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा **200** शब्द):

(अ) "मन संकल्प और विकल्पात्मक है। विकल्प विचार की परीक्षा करता है। तर्क-वितर्क कर लेने पर भी किसी संकल्पात्मक प्रेरणा के ही द्वारा जो सिद्धान्त बनता है, वही शास्त्रीय व्यापार है। अनुभूतियों की परीक्षा करने के कारण और इसके द्वारा विश्लेषणात्मक होते-होते उसमें चारुत्व की, प्रेम की कमी हो जाती है। शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान को इसीलिए विज्ञान मान सकते हैं कि उसके मूल में परीक्षात्मक तर्कों की प्रेरणा है और उनका कोटि-क्रम स्पष्ट रहता है।"

अथवा

शृंगार का परम उत्कर्ष परकीया में मानने का यही दार्शनिक कारण है—जीव और ईश की भिन्नता। हाँ, इस लक्षण में धर्म के उल्लघंन करने का भी संकेत है। विवेकवादी भावगत धर्म ने जब आगमों के अनुकरण में आनन्द की योजना अपने सम्प्रदाय में की, तो उसके प्रेमा भक्ति के कारण श्रुति-परम्परा के धार्मिक बन्धनों को तोड़ने का भी प्रयोग प्रारम्भ हुआ। उनके लिए परम तत्व की प्राप्ति सांसारिक परम्परा को छोड़ने से ही हो सकती थी। **7**

(ब) क्या काव्य कला है ? प्रसाद जी के 'काव्य और कला' निबन्ध के आधार पर काव्य और कला की परस्पर भिन्नता व उनके सम्बन्ध को समझाइए। (शब्द सीमा **400** शब्द)।

अथवा

'यथार्थवाद और छायावाद' निबन्ध के आधार पर यथार्थवाद तथा छायावाद के स्वरूपों का विश्लेषण कीजिए तथा बताइए कि छायावाद पाश्चात्य देन है या भारतीय देन। (शब्द सीमा **400** शब्द)। **10**

(स) 'आरम्भिक पाठ्य काव्य' से प्रसादजी का क्या आशय है ? इसे समझाते हुए पाठ का सारांश लिखिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)।

अथवा

'प्रचीन आर्यावर्त—प्रथम सम्राट इन्द्र और दाशराज्ञ युद्ध' निबन्ध के आधार पर बताइए कि क्या आर्य बाहर से भारत में आए थे ? (शब्द सीमा **100** शब्द)। **3**

इकाई–V

5. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (शब्द सीमा **200** शब्द) :

(अ) "मेरे लिए सब भूमि मिट्टी है, सब जगह तरल है, सब पवन शीतल है। कोई विशेष आकांक्षा हृदय में अग्नि के समान प्रज्वलित नहीं। सब मिलाकर मेरे लिए शून्य है। प्रिय नाविक! तुम स्वदेश लौट जाओ, विभवों का सुख भोगने के लिए, मुझे छोड़ दो, इन निरीह भोले-भाले प्राणियों के दु:ख की सहानुभूति और सेवा के लिए।"

अथवा

"आवश्यकता से प्रेरित होकर जैसे एक अत्यन्त कुत्सित मनुष्य धर्माचार्य बनने का ढोंग कर रहा है, ठीक उसी प्रकार मैं स्त्री होकर भी पुरुष बनी। यह दूसरी बात है कि संसार की सबसे पवित्र वस्तु धर्म की आड़ में आकांक्षा खेलती है। तुम्हारे पास साधन हैं, मेरे पास नहीं, अन्यथा मेरी आवश्यकता किसी से कम न थी।" **7**

(ब) प्रसाद जी ने एक ही पात्र के प्रति प्रेम और घृणा का भाव दिखाकर विचित्र मानसिक द्वन्द्व का चित्रण किया है। 'आकशदीप' कहानी के आधार पर इस कथन का विवेचन कीजिए। (शब्द सीमा **400** शब्द)।

अथवा

जयशंकर प्रसाद की प्रमुख कहानियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी ममता कहानी की तात्विक आलोचना कीजिए। (शब्द सीमा **400** शब्द)। **10**

(स) प्रसाद लिखित कहानी 'देवदासी' का कथानक लिखकर इसकी संक्षिप्त समीक्षा कीजिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)।

अथवा

'भिखारिन' कहानी का सारांश लिखकर उसकी समीक्षा कीजिए। (शब्द सीमा **100** शब्द)। **3**